# प्रतिवेदन

## विषय:- पाकिस्तान : पहचान का संकट, छिन्न-भिन्न अर्थव्यवस्था एवं निरर्थक राज्य का विघटन-

## (Pakistan : Identity Crisis, Shattered Economy and Balkanization of a Futile State)

राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच की ओर से इस विषय को लेकर 23-24 जून, 2021 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया गया

## वक्ताओं के संबोधन के मुख्य बिन्दु :

- **Shri Golok Behari Rai- National General Secretary (Org), FANS**

पाकिस्तान आज कई तरह के संकटों से घिरा हुआ है। पाकिस्तान के सामने सबसे बड़ी समस्या पहचान का संकट है। उसकी अखण्डता और सम्प्रभुता पर संकट है, जो पाकिस्तान के जन्म के साथ ही उठ खड़ा हुआ। पाकिस्तान के समक्ष भाषाई, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि कई तरह के पहचान का संकट है। इसके कारण पाकिस्तान एक विफल स्टेट के रूप में तब्दील हो गया। बंटवारे के बाद से ही पाकिस्तान में पहचान का संकट गहराने लगा था। जबकि कभी पूर्वी पाकिस्तान रहे बांग्लादेश में इस तरह की कोई समस्या नहीं रही। शुरू से ही बांग्लादेश की राष्ट्रीयता व पहचान उसके इतिहास और संस्कृति से जुड़ी है। अपनी संस्कृति को और बढ़ावा देने की कोशिश में लगा है तथा अपनी संस्कृति की जड़ से जुड़ने का प्रयत्न कर रहा है। वहीं, पाकिस्तान ने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया और अपनी छद्म पहचान-राष्ट्रीयता, "धर्म पांथिक राष्ट्रीयता- इस्लामिक राष्ट्र" के पहचान को गले से लगाए रखा। जिसका नतीजा है कि पाकिस्तान में आज पहचान का संकट गहरा गया है। मौजूदा समय में पाकिस्तान आर्थिक संकट से तो जूझ ही रहा है, साथ ही वह अपनी पहचान के संकट को लेकर भी काफी मुश्किलों का सामना कर रहा है। पाकिस्तान के सामने पहचान के संकट की समस्या अब काफी गहरी हो गई है। बंटवारे के बाद से ही पाकिस्तान के सामने अपनी पहचान को लेकर संकट उत्पन्न होने लगीं, जिसकी जड़े काफी पुरानी हैं। और आज यह समस्या काफी गहरे व्याप्त हो गई हैं,

जिसका खामियाजा पाकिस्तान के लिए आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक तौर पर एक विघटित स्टेट के तौर पर सामने आने लगा है।

इसके अलावा, पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था आज गहरे गर्त में जा धंसी है। इसकी जीडीपी काफी कम हो गई है। कर्ज में डूबे पाकिस्तान में आए दिन नए संकट सामने आ रहे हैं। पाकिस्तान की आर्थिक हालत इस कदर खराब हो चुकी है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से उसे कई बार चेतावनी भी मिल चुकी है। पाकिस्तान की खराब आर्थिक हालत का आलम यह है कि वह विदेशी ताकतों को अपनी जमीन बेचने पर मजबूर हो चुका है। पहले से लिए गए भारी भरकम कर्ज को चुकाने के लिए और अधिक कर्ज ले रहा है।

पाकिस्तान की अपनी मूल पहचान, धार्मिक राष्ट्रीयता के संदर्भ में अब तक साबित नहीं हो पाई है। पाक की अखंडता, सम्प्रभुता और सार्वभौमिकता चिथड़ों में लिपटी हुई टुकड़े-टुकड़े में बिखरने की स्थिति में है । जो एक अस्थिर भूखा नंगा विफल राष्ट्र अपने को साबित कर चुका है । पाकिस्तान आज एक निरर्थक राष्ट्र घोषित हो चुका है ।

- **Dr. Indresh Kumar- Chief Patron, FANS & National Executive Member, RSS**

पाकिस्तान को एक बड़ी समस्या करार दिया। 14 अगस्त, 1947 में अप्राकृतिक रूप से जन्मे पाकिस्तान को लेकर बंटवारे के बाद से ही इस देश में कभी स्थिरता नहीं रही। धार्मिक कट्टरवाद के चलते हालात बद से बदतर होते चले गए।

'वसुधैव कुटुंबकम: वलर्ड कैन लिव एज व वन फैमिली' के तहत पूरी दुनिया एक साथ सहअस्तित्व के साथ रह सकती है। भारत हमेशा से इस सिद्धांत को जिता आया है और दुनिया को एक सकरात्मक संदेश देता आया है। आज पूरी दुनिया 'ॐ' के महत्व को समझ रही है और इसका अनुभव भी किया है। भारत ने सत्य व सही को हमेशा से परिभाषित किया है। दुनिया के अधिकांश देश अमनपसंद हैं और आपसी समन्वय से राष्ट्र और समाज का संचालन कर रहे हैं। लेकिन पाकिस्तान में स्थितियां पूरी तरह से उल्टी है। यह देश कई मोर्चों पर आज संकट का सामना कर रहा है। इन्हीं में से आज एक पहचान का संकट उसके सामने है। भाषाई, सामाजिक, आर्थिक तौर पर पाकिस्तान में कई विषमताएं हैं। पाक हमेशा से अपनी पहचान ढूंढने में भटक रहा है। पाकिस्तान के अंदर स्थानीय तबकों में अपनी पहचान के संकट को लेकर सवाल उठने लगे हैं।

पाकिस्तान के बनने के बाद कई भाषाएं, भौगोलिक क्षेत्र विशेष रूप से जुड़े। सिंध क्षेत्र, बलूचिस्तान, वजीरिस्तान, पश्तूनिस्तान के साथ साथ एक बड़ी जनसंख्या भी जुड़ी। गिलगित बाल्टिस्तान भी बाद में पाक के भूगोल में जुड़ा। लेकिन पाकिस्तान ने कभी भी इन्हें नहीं अपनाया। बंटवारे के बाद भारत के विभिन्न राज्यों से लोग वहां गए, लेकिन उसे पाक ने नहीं अपनाया। जिसे वे आज भी मुजाहिर कहते हैं। आज इन मुजाहिरों के सामने पहचान का संकट गहरा गया है। अब ये अलग सिंध देश, बलूचिस्तान, वजीरिस्तान आदि बनाने की मांग कर रहे हैं। इसका खामियाजा भी इन्हें भुगतना पड़ रहा है। पाकिस्तानी सरकार और पाक फौजों की ओर से इन पर आए दिन बेइंतहा जुल्म व अत्याचार किए जा रहे हैं।

जियो सिंध मूवमेंट के अंतर्गत सिंध क्षेत्र के नेता आवाज उठा रहे हैं। इन्होंने अपने स्वतंत्र अस्तित्व की मांग शुरू से उठाई है। 1947 से आज तक सिंधी नेता व सिंधी जनता संघर्ष कर रही है। बलूचों पर किस कदर पाक फौज जुल्म कर रही है, ये अब पूरी दुनिया ने देखा है। बलूच नेता स्थानीय स्तर पर प्रतिकार के साथ साथ विदेशी धरती से भी इसके खिलाफ आवाज बुलंद कर रहे हैं। कई बलूच नेता विभिन्न देशों में रहकर आजाद बलूचिस्तान की मांग को लेकर जनजागरण, जनक्रांति कर रहे हैं। पाकिस्तानी पंजाब में भी घनघोर अंतर्कलह है। लोकतंत्र के नाम पर वहां धज्जियां उड़ाई जा रही है। यही नहीं, पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को चुन चुनकर निशाना बनाया जा रहा है। इस देश में अल्पसंख्यकों की हालत काफी दयनीय है। अल्पसंख्यक के तौर पर वहां हिंदू, सिख, जैन समुदाय के उपर काफी अत्याचार, जुल्म किए जा रहे हैं। पाक में अल्पसंख्यकों की स्थिति काफी बदहाल है, आए दिन ये घटनाएं मीडिया में सामने आती रहती हैं। पाकिस्तान संवैधानिक तौर पर लोकतांत्रिक देश नहीं है। यह मजहबी देश है, मजहबी कट्टरता से भरा है। पाकिस्तान में अल्पसंख्यक सबसे अधिक पीड़ित हैं। पाकिस्तान का अब तक समुचित विकास नहीं हुआ है। पाकिस्तान का जन्म ही अत्याचार, अन्याय का मौलिक स्वरूप है। पाकिस्तान एक मुल्क होने का वजूद खोता जा रहा है।

पाकिस्तान ने मजहबी कट्टरता और नापाक कूटनीति के जरिये कश्मीर को अशांत कर दिया। धारा 370 हटने के बाद से वहां स्थिति में काफी सकारात्मक बदलाव आया है। आतंकियों का सफाया हो रहा है, पत्थरबाजों की जड़ें खत्म हो गई हैं। भारत के साथ पाक की सीमा हमेशा अशांत रहती है। पाकिस्तान अपने बजट का अधिकांश हिस्सा सीमा पर गोलीबारी, हिंसा आदि पर खर्च करता है। इस कारण पाकिस्तान में आर्थिक अस्थिरता है। इसका नाजायज फायदा आज चीन उठा रहा है। चीन एक तरह से आर्थिक साजिश रचकर पाकिस्तान को दलदल की ओर धकेल रहा है और उसे आर्थिक चंगुल में फंसाता जा रहा है। गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा पाकिस्तान अब दिवालिया होने के कगार पर पहुंच गया है। कंगाल हो रहे पाकिस्तान को अपने कर्ज को चुकाने के लिए अब लोन लेकर लोन चुकाना पड़ रहा है। एक तरह से पाकिस्तान चीन का उपनिवेश बनने की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि सिंध, बलूचिस्तान, पश्तूनिस्तान, गिलगित बाल्टिस्तान क्षेत्र को आने वाले समय में अपना वजूद हासिल होगा। इन क्षेत्रों में चल रहे जनआंदोलनों व संघर्ष से पाकिस्तान निश्चित ही परास्त होगा। ये सभी मिशन जरूर सफल होंगे। वह दिन अब दूर नहीं, जब पाकिस्तान टूटता बिखरता नजर आएगा। पाकिस्तान के अत्याचारों, जुल्मों से मुक्ति को लेकर संघर्ष का परिणाम जल्द सामने आएगा। वह दिन दूर नहीं जब संघर्ष के सभी आंदोलन सफल होंगे । दुनिया के देशों को सकारात्मक वातावरण बनाना चाहिए, जिसमें सभी की स्वतंत्रता सुनिश्चित हो सके। हमारा मार्ग युद्ध नहीं, शांति अहिंसा का होना चाहिए। बेहतर जीवन का अधिकार सभी को मिलना चाहिए। पाकिस्तान को अपनी सोच में जरूर बदलाव लाना होगा। विभिन्न संगठनों जैसे सिंध, बलूच, पश्तून आदि के नेताओं से अपने संघर्षों को एकजुट होकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है ।संघर्षरत सभी नेताओं को चाहिए कि वे एकजुटता प्रदर्शित करें और एक साथ बैठकर एक समग्र आंदोलन की रूपरेखा तैयार करें। ताकि एक मजबूत आवाज दुनिया के सामने आ सके। इससे पाकिस्तान के अंदर इन

समुदायों के खिलाफ घटित हो रही घटनाओं पर लगाम लग सके। सभी नेता 'मिनिमम प्रोग्राम, मैक्सिमम अंडरस्टेंडिंग' के तहत साथ आएं तो इनके आंदोलन को धार मिलेगी और मंजिल आसान होगा। इनके प्रयासों में भारत का भी पूरा सहयोग मिलेगा। सभी नेताओं की एकजुट आवाज बहुत बड़ी ताकत बनेगी। भारत ने सिंध, बलूच, पश्तून आदि के आंदोलनों को हमेशा समर्थन दिया है। पाकिस्तान को पूरी तरह बेनकाब करने के लिए एकजुट आवाज, आपसी समर्थन जरूरी है। सभी मूवमेंट को सोशल मीडिया पर बेहतर तरीके से प्रसारित करना चाहिए ताकि आवाज को दुनिया के मंच पर मजबूती मिले और प्रमुखता के साथ दुनिया को सोचने के लिए मजबूर होना पड़े।

- **Prof. Naela Quaderi Baloch- Chairperson, Baloch People's Congress, Canada**

पाकिस्तान ने मजहब का जो सब्जबाग दिखाया, उसका बुलबुला अब फूट चुका है। पाक के संविधान के गठन के समय दूसरे मजहबों के हितों को शामिल नहीं किया गया। इसकी मंशा शुरू से ही साफ थी। आज आलम यह है कि पाक के सभी सीमा क्षेत्र विवादों से घिरे हैं। एलओसी, डूरंड लाइन आदि सब पर विवाद है। बलूचों का मानना है कि मजहब के नाम पर पाकिस्तान एक विफल देश है। जिस सउदी अरब से वह खुद को जोड़ता है, उसने भी पाकिस्तान के लोगों को मजहब के नाम पर अपनाने से इंकार ही किया है। बलूचिस्तान तो शुरू से ही एक आजाद मुल्क था। बलूचों ने कभी भी मजहब के नाम पर दूसरों के साथ नफरत नहीं पाला। बलूचिस्तान में सिख बलूच आज भी बेहतर तरीके से जिंदगी जी रहे हैं।

पाकिस्तान का बलूचों को लेकर शुरू से ही दोहरा रवैया रहा है। बलूचिस्तान में आज पाक की ओर से जो बजट दिया जाता है, वो न के बराबर है। स्थानीय लोगों की सेहत, शिक्षा को दरकिनार कर पाक सेना को ज्यादा बजट दिया जाता है। सरकार में पाक सेना का सर्वाधिक नियंत्रण है, उसी के अनुसार पाक का बजट निर्धारित किया जाता है। जिसका नतीजा यह होता है कि पूरा बलूचिस्तान इससे प्रभावित है।

पाक सेना चीनी हथियार के दम पर बलूचों पर जुल्मों सितम कर रहा है। पाक को बलूचों के नाम से ही नफरत है। बलूचों के वजूदों को मिटाने पर आमदा है। बलूचिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा जमाना इनका मुख्य मकसद है। हाल में पाक सेना ने बलूचों पर कई बार हमला किया। कई महिलाओं का गैंगरेप किया और बेइंतहा जुल्म किए। पाक सेना के बैरक मौजूद हैं और बलूचों पर बेइंतहा जुल्म कर रहे हैं। भारत ने हमेशा बलूचों का साथ दिया है। भारत सरकार को यूनाइटेड नेशन में बलूचों के समर्थन में आवाज उठानी चाहिए। बलूचों के निर्वासित सरकार को लेकर भी भारत को समर्थन देना चाहिए। सभी भारतीयों को बलूचों के समर्थन में आवाज उठानी चाहिए।

❖ **Dr. Amjad Ayub Mirza-** **Author and Human Rights Activist from PoJK, UK**

पाकिस्तान की अपनी कोई कौम नहीं है। पूरे पाकिस्तान पर वहां की फौज का कब्जा है। पाक फौजी राज्य के जागीरदारों व मौलवियों के जरिये वहां की जनता पर अपरोक्ष शासन करते हैं। मस्जिदों में वहां के स्थानीय लोगों को ऐसी बातें बताई जाती हैं, जो उनके विचारों, सोच व दिमागों को कुंद कर रहा है। इसी कारण से पाकिस्तान की हालत दिनोंदिन बदतर होती जा रही है। आम लोगों के सही मकसद, पहचान, संस्कृति आदि को पाक में खत्म किया जा रहा है। इनका गुप्त रूप से मकसद गजवा ए हिंद है। पाकिस्तान में जब संस्कृति है ही नहीं, तो लोगों को अपनी सही सोच कैसे विकसित होगी। सिंध, बलूचिस्तान, पश्तूनिस्तान, गिलगित बाल्टिस्तान आदि कई राज्यों को वह खुद में पूरी तरह से नहीं मिला पाया है। इन प्रांतों में लोगों को दोयम दर्जे का माना जाता है। आए दिन इन सूबों के लोगों के साथ भेदभाव, अन्याय, बर्बरता आदि की घटनाएं सामने आती रहती हैं। ऐसे तो यह मुश्किल है, लेकिन यदि पाक को अपने यहां एक नया कल्चर विकसित करना होगा, जैसा कि पूर्व में चीन, रूस आदि देशों ने किया। आज इस देश की हालात बदतर हो गयी है, इन सबके पीछे पाक सरकार, पाक सेना का हाथ है। अपनी पहचान को बरकरार रखते हुए सिंधियों, पश्तूनों, बलूचों को अपनी आजादी के लिए एकजुट होकर नए सिरे से संघर्ष छेड़ना होगा।

❖ **Dr. Smruti S Pattanaik-** **Research Fellow, MP-IDSA, New Delhi, India**

पाकिस्तान में पहचान का संकट काफी बुरे दौर में है। इसके पीछे कई अहम कारण हैं। इसमें मुख्य यह है कि बंटवारे के बाद से ही पाकिस्तान ने वहां गए लोगों को आत्मसात नहीं कर पाया और न ही अपनी कोई मूल पहचान बना पाया। अपनी संस्कृति को वह पश्चिम एशिया के कुछ मुस्लिम देशों के साथ वह जोड़ने की कोशिश करता है, लेकिन उससे

भी पाक का कोई जुड़ाव नहीं हो पाया है। पाकिस्तान ने एक भाषा, एक धर्म की अवधारणा को बनाने की पूरी कोशिश की, लेकिन इसमें भी वह विफल रहा। पाक में इस पहचान के संकट के पीछे वहां की सेना पूरी तरह जिम्मेवार है। पाकिस्तान में मौजूद 76 विभिन्न सेक्ट यानी पंथ, संप्रदायों में शुरुआत से ही विभिन्नता व्याप्त है। वे कभी अपने मूल पहचान को लेकर गंभीर नहीं रहे, यही कारण है कि पहचान का संकट अभी तक व्याप्त है। बलूच, सिंध, पश्तून आदि को पाक सेना की वजह से पहचान के संकट का सामना करना पड़ रहा है। पाकिस्तान अपने गठन के कुछ सालों के बाद अरब के इस्लाम से प्रभावित हुआ, जिसके चलते भी वहां पहचान का संकट बना हुआ है। पाक को यदि इससे निजात पाना है तो उसे भाषाई अनेकता, बहुभाषिता को अपनाना होगा

- **Mr Senge Hassan Sering- Director Gilgit Baltistan National Congress USA**

पाकिस्तान अपने पहचान की संकट का समाधान खोजने में अभी तक नाकाम रहा है। यह काफी हैरान करने वाला लेकिन दुखद भी है कि पाकिस्तान सिंधु घाटी सभ्यता को स्वीकार तो करता है, परंतु खुद को भारत का हिस्सा मानने से इनकार करता है। यह भी दुखद है कि पाकिस्तानी मुगल आक्रांताओं का सम्मान करते हैं, खुद को उनसे जोड़ते हैं, जिन्होंने उनके पूर्वजों पर अत्याचार किए हैं। वहां की जनमानस की ऐसी सोच भी मूल पहचान के संकट के लिए जिम्मेवार है। पाकिस्तान में शासन में शामिल रहे लोग तथा पाक फौजों ने शुरू से ही हिंदू के प्रति नफरत के बीज बोकर सिर्फ अपना उल्लू सीधा किया है। इस नाम पर वहां काफी भ्रष्टाचार भी हुआ है। उनकी यह हमेशा से कोशिश रही है कि हिंदू विरोध, नफरत को जिंदा रखो ताकि समय समय पर पाक कौमों की भावनाओं को भड़काया जा सके। पाकिस्तान में सिंध, पश्तून, बलूच क्षेत्रों में आज हालात बदतर हैं। दशकों से यहां रहने वाले लोग पाक फौजों के जुल्म को सहन कर रहे हैं। महिलाओं, बच्चों पर इतनी बर्बरता की जाती है कि उन घटनाओं को सुनकर लोग भयाक्रांत हो जाते हैं। गिलगित बाल्टिस्तान में भी स्थानीय लोगों पर पाक फौज आए दिन कहर बरपाती रहती है। इन क्षेत्रों में अब तक हजारों मुसलमान, अल्पसंख्यक मारे गए हैं। पाकिस्तान में पहचान के संकट की वजह से वहां की अर्थव्यवस्था तबाह हो चुकी है।

- **Yoga Guru Mansoor Mohammad Ali Baluch- Activist, Baloch Community, India**

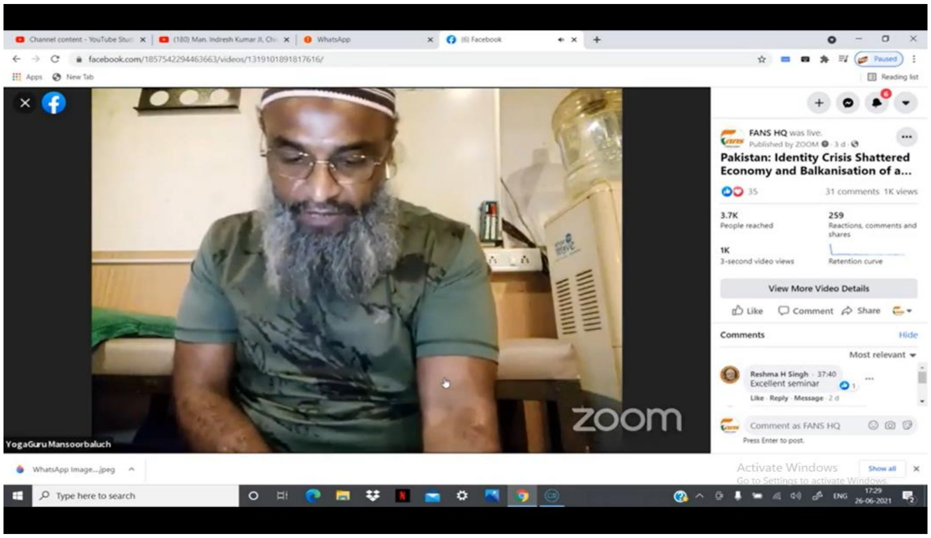


पाकिस्तान की आंतरिक स्थिति काफी खराब है। बंटवारे के समय जो प्रांत पाक में शामिल किए गए, वहां के नागरिकों के साथ शुरू से ही काफी बर्बर व्यवहार किया गया। जितने भी पाक के सरहदी सूबे हैं, वह कभी इनके साथ नहीं रहा। अपनी मूल पहचान के साथ सिंध, पश्तून, बलूच आदि शुरू से ही पाक से अलग होने को लेकर आंदोलनरत हैं। इसके चलते इन राज्यों के लोगों को काफी यातनाएं सहन करनी पड़ी हैं। बलूचिस्तान की आजादी को लेकर जो आंदोलन चलाए जा रहे हैं, उसे भारत सरकार को समर्थन करना चाहिए। जनजागरण, जनआंदोलन से ही पाकिस्तान के उपर दबाव बनेगा और एक न एक दिन पाक से आजादी जरूर मिलेगी। सभी संगठनों को एकजुट होकर पाक सरकार और पाक सेना के जुल्म के खिलाफ जमकर आवाज उठानी होगी।

- **Lt Gen (retd.) K J Singh- PVSM, AVSM and Bar (Veteran), National Vice-President, FANS**

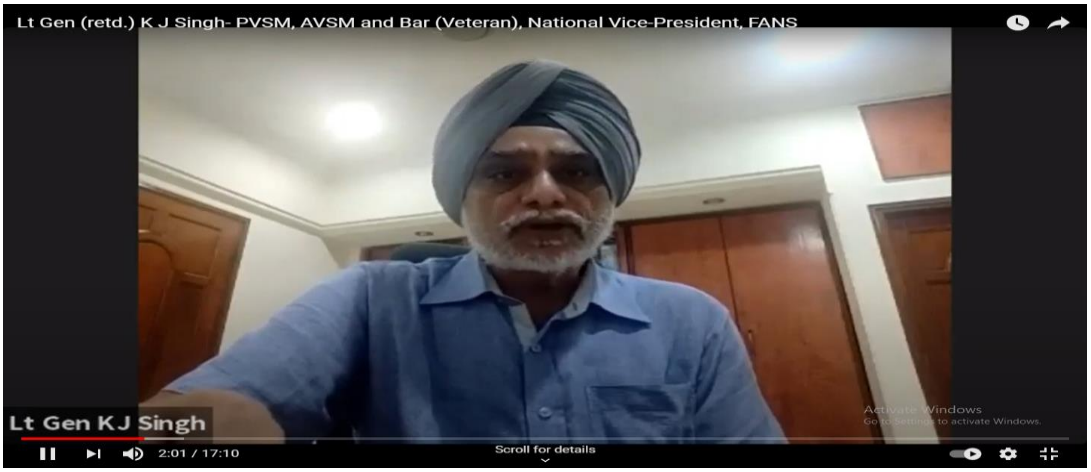


सिंध, बलूचिस्तान, पश्तूनिस्तान, गिलगित बाल्टिस्तान आदि राज्यों के आजादी अभियानों से जुड़े सभी अंतरराष्ट्रीय, देशीय व स्थानीय संगठनों को अपनी सोच, विचारों को लेकर एकजुट होना होगा। इन सभी संगठनों को समग्र रूप से अपने आजादी के आंदोलन को चलाना होगा, तभी इस पूरे मिशन में सफलता हासिल हो पाएगी। भारत का पश्तूनों,

बलूचों आदि के साथ पहले से बेहतर संबंध रहा है। हालांकि वर्तमान में पश्तूनों के साथ वैसे संबंध नहीं हैं, जिन्हें सुधारने की आवश्यकता है। पाक के विघटन के संदर्भ में पूर्व में हमने कई देशों का विघटन देखा है। इसका अनुमान उस वक्त नहीं लगाया जा सकता था कि ऐसा कुछ होगा। ऐसी बहुत सी मिसालें हैं। यदि संगठित होकर आंदोलनों को अंजाम दिया गया तो पाक का विघटन निकट भविष्य में जरूर होगा।

पाकिस्तान में मुजाहिरों को लेकर एक अलग समस्या व्याप्त है। पाक में मुहाजिर और शरणार्थियों के बीच आए दिन झड़प, हिंसा की घटनाएं होती रहती हैं। पाकिस्तानी लोगों को अपनी फौजों की कारस्तानी के खिलाफ जरूर सोचना चाहिए। पाक सेना के अत्याचारों के खिलाफ पाकिस्तानी आवाम को अपनी आवाज जरूर बुलंद करनी चाहिए। एक दिन जरूर आएगा जब पाक आवाम वहां की फौजों के खिलाफ डटकर सामने आ खड़ी होगी। पाकिस्तानी की सेना के अंदर भी एकरुपता नहीं है। उनके अंदर भी कुछ धड़े में असंतोष पहले से है। पाक का अरब की तरफ झुकाव खतरनाक है, जिससे वहां पहचान का संकट है। पाकिस्तानी आवामा ने बंटवारे के बाद गंगा जमुनी तहजीब को दरकिनार किया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान एक न एक दिन जरूर टूटेगा। चूंकि पाक वहां की कौमें, समाज के साथ भेदभाव करता है। भारत को बाहर से ही आंदोलनरत संगठनों को समर्थन देना चाहिए।

- **Mr. Razzak Baloch- Secretary General, Baloch American Congress, USA**

पाकिस्तान की पहचान का फैसला मोहम्मद अली जिन्ना ने उस वक्त ही कर दिया था, जब उन्होंने पाक को ब्रिटिशों का दलाल बनाकर रखने का फैसला किया। पाकिस्तान ने बंटवारे के समय भारत के साथ गद्दारी की। आज भी पाकिस्तान की फौजें ब्रितानी हुकूमत के प्रति लगाव रखती है। पाकिस्तान की अपनी कोई पहचान है ही नहीं। अब यह एक बड़ा संकट बन चुका है। इसी कारण के चलते एक दिन पाकिस्तान का विघटन जरूर होगा। इस समय पाकिस्तान की हालत काफी खराब है, पाक फौजों को भी अब पहले की तरह पूरी सुविधा नहीं मिल पाती है। इसका कारण वहां की खराब आर्थिक हालत है। पाक फौजें पूरी तरह बेलगाम हो चुकी है और केवल बंदूक की जुबान ही समझती है। बलूचों का सभी धर्मों के प्रति एक समान नजरिया है। यही कारण है कि बलूचिस्तान से आज तक एक भी हिंदू का पलायन नहीं हुआ है। बलूचिस्तान का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि वहां संसाधनों को लूटा जा रहा है। यह सब पाक सरकार के इशारे पर पाक सेना अंजाम दे रही है। बलूचों पर ढाए जा रहे बंइतहा जुल्म, अत्याचार को पाक सरकार का पूरा समर्थन है। बलूचिस्तान में पाक सेना जनसंहार, जातिसंहार खुलेआम कर रही है। महिलाओं, बच्चों, छात्रों को सरेआम मारा जा रहा है। महिलाओं, लड़कियों के साथ गलत व्यवहार किया जा रहा है। जबकि बलूचिस्तान पहले से ही एक आजाद मुल्क था। हम पर शासन करने का पाक को कोई हक नहीं है। भारत, बांग्लादेश को बलूचों के समर्थन में अंतरराष्ट्रीय कोर्ट में साथ देना चाहिए और पाक फौज को कटघरे में खड़ा करना चाहिए। पाकिस्तानी फौजों की

बर्बरता पर काबू करने के लिए बलूच, पश्तून, सिंध में अलग सैन्य ईकाई जरूरी है ताकि इन प्रांतों के लोग अपनी हिफाजत कर पाएं। भारत को इसमें भूमिका निभानी चाहिए। बलूच, सिंधी, पश्तून ये सभी पाक के साथ नहीं रहना चाहते हैं। ये सभी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं।

- **Mr. Zafar Sahito- Vice President: jeay Sindh Thinkers Forum, Exiled Jeay Sindh leader, living in USA-**

पाकिस्तान कोई देश नहीं है और न ही इसका कोई वजूद है। पाक में पहचान का संकट शुरू से ही व्याप्त है। पाकिस्तान का एक अप्राकृतिक देश के तौर पर जन्म हुआ है। इसी कारण से वहां पहचान का संकट है, जो अब इसकी तबाही का कारण बन रहा है। पाकिस्तान एक कैंसर स्टेट  है यह देश दुनिया को बर्बादी के सिवाय कुछ भी नहीं दे सकता है। यहां से निकले आतंकवाद का दंश पूरी दुनिया झेल रही है। राज्य प्रयोजित आतंकवाद इसका उदाहरण है। जब तक पाकिस्तान का नामोनिशान रहेगा, यह दुनिया के लिए विस्फोटक साबित होगा।
सिंध, बलूच, पश्तून सभी मुश्किल झेल रहे हैं। इन क्षेत्रों में पाक फौज की बर्बरता, अत्याचार अब किसी से छिपी नहीं है। यदि पाकिस्तान की कारस्तानी पर जल्द लगाम नहीं लगाया गया तो इसका खामियाजा भारत को भी भुगतना पड़ेगा। इसलिए भारत को हमारे आजादी के आंदोलन को समर्थन देना होगा।
पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था शुरू से ही डंवाडोल रही है। इस समय तो पाक में आर्थिक हालत बद से बदतर है। सिंध में संस्कृति को शासन की शह पर नष्ट किया गया। सिंध क्षेत्र में उपलब्ध प्रचूर संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए पाक यहां के लोगों पर अत्याचार भी कर रहा है। आज पाकिस्तान इतना मजबूर है कि वह विदेशों से कर्ज ले रहा है, और कर्ज के जाल में फंसता जा रहा है। पाकिस्तान में राष्ट्रीय अंतर्विरोध की वजह से आज वहां अर्थव्यवस्था छिन्न भिन्न है। भारत को इस संघर्ष का साथ देना होगा। भारत की इसमें एक बड़ी भूमिका है। तभी पाकिस्तान के जुल्म से निजात मिल पाएगी।

- **Dr. Ashok K. Behuria- Senior Fellow and Coordinator of the South Asia Centre, MP-IDSA, New Delhi, India**

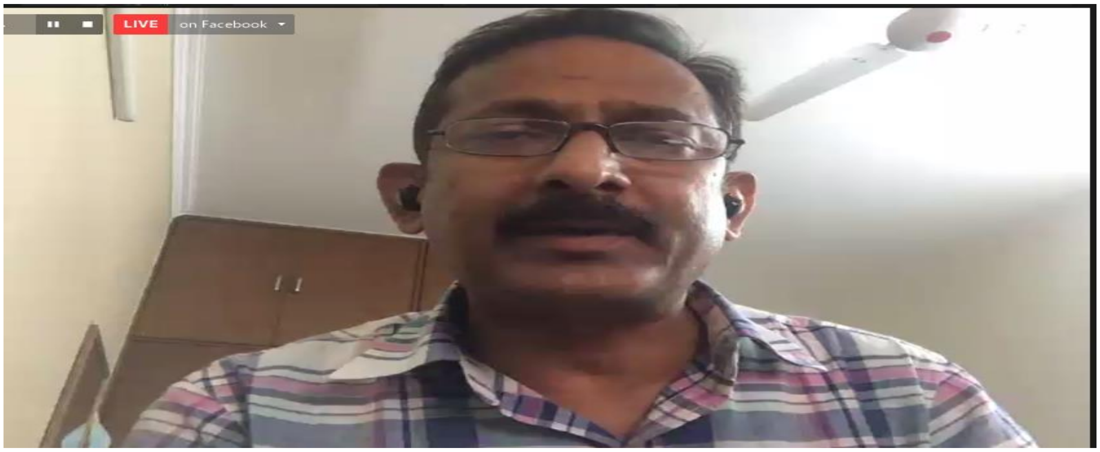

पाकिस्तान का एक देश के तौर पर आज तक उदय नहीं हो पाया है। यह भी तय नहीं हो पाया कि यह मुसलमानों का मुल्क है या इस्लामिक मुल्क है। इस्लाम में भी विभिन्नता है और इनमें कई मुद्दों पर टकराव है। पाकिस्तान आज तक एक इस्लामिक देश नहीं बन पाया है और ऐसा करने के पीछे पाक शासन अपनी सभी नीतियों में विफल साबित हुआ है । अब तो पाकिस्तानी फौजों को लेकर भी सवाल उठने लगे हैं। इस देश में इस्लाम को लेकर पहचान का संकट बना हुआ है। विभिन्न पंथ, संप्रदाय का अलग अलग मत है, जिससे इस्लामी सोच को लेकर दरार बना हुआ है।

पाकिस्तान हमेशा से दुनिया के सामने एक विकट चुनौती प्रस्तुत करता आ रहा है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण वहां से पनपने वाला आतंकवाद है। फिर भी दुनिया के कुछ ताकतवार राष्ट्र समय समय पर उसे आर्थिक मदद देते आ रहे हैं, जोकि सरासर गलत है। इनकी मदद से पाकिस्तान आतंकवाद की नर्सरी को जिंदा रखे हुए हैं। पाकिस्तान जितना खतरनाक होगा, उतनी ही उसे अंतरराष्ट्रीय समुदाय की सहानुभूति भी मिलती रहेगी। इसकी यह बेजा फायदा उठाने की कोशिश भी करता रहता है। इसलिए हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि वहां एक स्थिर सरकार हो ताकि विकासात्मक सोच को अपनाकर वह आगे बढ़े।

- **Mr. Syed Zaker Shah (Pasthun)- Human Rights & Social Activist (UK)-**

पाकिस्तान सरकार और पाक सेना की जमकर निंदा की। पश्तूनों का जिक्र करते हुए कई सालों से निरंतर जारी पश्तूनों का संघर्ष अपने अधिकार के लिए है। पाकिस्तान में पश्तूनों पर जो जुल्म, अत्याचार किए जा रहे हैं, उससे निजात पाने के लिए ही हमारा संघर्ष जारी है। हमने अब तक हजारों कुर्बानियां दी हैं, अब इस विकट समस्या से हर हाल में निजात मिलना चाहिए। आजादी के आंदोलन में सक्रिय विभिन्न सभी संगठनों को ईमानदारी के साथ आना होगा और एकजुट होकर आवाज को बुलंद करनी होगी। अन्यथा पाक सरकार व सेना के जुल्म, अत्याचार का सिलसिला यूं ही चलता रहेगा।